भोजापुर

बनारस जिले मे सकलडीहा और चन्दौली के बीच एक छोटा सा गॉव भोजापुर है. जहॉ की आवादी लगभग पॉच हजार है। इस गॉव मे कच्चे पक्के सौ से भी ऊपर घर हैं। समीप से ही एक पक्की सड़क भी गुजरती है. जिसपर बनारस से चलने वाली सारी वसें भोजापुर होकर जमनिया या दिलदारनगर तक जाती हैं। पक्की सड़क से भोजापुर को दो रास्ते जोड़ते है। पूरव से भोजापुर मे आने के लिए ज्यादेतर खेतों के मेढों पर ही चलना पड़ता है। थोड़ी दूर चलने के बाद ही आमों का एक बाग आता है. जहॉ कईयों के खलिहान भी हैं। फिर शेष रास्ता थोड़ा चौंड़ा हो जाता है। गॉव के इसी छोर पर एक कच्चे खपरैल का एक कमरे का स्कूल है. जिसमे गॉव के हर तवके के बच्चे गिनती और पहाड़ा सीखने आते हैं। स्कूल की पिछली दीवार पर बड़े बड़े अच्छरों मे लिखाःभरा नही जो भावों से बहती जिसमे रसधार नही. हृदय नही वो पत्थर है जिसमे स्वदेश का प्यार नही. गॉव के बच्चों से लेकर बूढ़ों तक को कन्ठस्थ याद है। दूर से ही बच्चों का सस्वर दू के दू दू दूनी चार सुनाई पड़ते हैं। स्कूल के सामने ही एक पक्का कुआॅ है. जहॉ से कई घरों मे पीने का पानी जाता है। इसके चवूतरे पर जगह जगह दरारें पड़ चली है. जिनमे से छोटे छोटे पीपल के पौधे झॉकते रहते हैं। सबसे पहला घर पारस बाबा का पड़ता है. जिसका अहाता मिट्टी की दीवारों से घिरा है। इस अहाते मे भी एक पक्का कुआॅ है। उनके अहाते के बगल से होता हुआ ये रास्ता गॉव के पश्चिम मे बसे घरों तक जाता है। उन्ही के अहाते से लगा ये रास्ता दक्खिन दिशा मे मुड़कर दो चार धोबियों के घरों से गुजरता पन्डित रामजनम जी के पक्के मकान से होकर बेहद संकरा हो कर हमे हमारे घर तक ले जाता है। इस रास्ते को संकरा हमारे और मास्टर साहब की बईठका की दीवारों और अहातों ने कर रखा है। हमारे बईठका के अहाते से लगी ही एक सफेद रंग की छोटी सी समाधि है जिसे सारा गॉव शहीद बाबा की समाधि कहता है .जिसपर गॉव की बूढी औरते हर शाम दिया जला आती हैं। शहीद बावा कौन थे. ये किसी को मालूम नही है. पर इस समाधि की उत्पति कैसे हुई. ये मुझे पता है।

मास्टर साहब के बईठके के पिछवाड़े और बगल की थोड़ी बहुत जमीन पर एक बड़ा सा मिट्टी का डीह था. झाड़ों झंखाड़ो. सॉपों. विच्छूओं से भरा। मुझे ये पता न था कि ये जमीन पारस बाबा के परिवार की है। उनके एक चचेरे भाई नेवी मे किसी अफसर की पद पर थे। जब वो रिटायर होकर वापस गॉव आए. तो बॅटवारे की पहल सबसे पहले वही किये। अपने सगे भाईयो व अपने एक चचेरे भाई के साथ वो पारस बाबा से अपनी पुश्तैनी जमीन साधिकार मॉग लिये। अब तक पारस बाबा न सिर्फ अपने पिता की. बल्कि अपने दो चाचाओं की जमीनें भी साथ साथ गोड़ते जोतते थे। बॅटवारे के बाद उनके अपने हिस्से की जमीन पर रव्वी और भदई की फसलें तो दूर रहीं. कॅकड़ी और कोंहड़ों की लत्तरों का फैलना तक मुश्किल हो गया। वो विरक्त होकर एक मंड़ई डाल लिए और चिलम गांजे मे अपने मन की शान्ति ढूॅढने जा पहुचें। उनके चचेरे भाई धनवीर सिंह एक से एक प्लान लेकर गॉव आए थे। मढईला पर उन्होने एक चक्की खोलके अपने एक चचेरे भाई को वहॉ बैठा दिया। परिवार मे एक नया ट्रेक्टर आया। घर के अहाते मे एक डेयरी फार्म खुला. जहॉ वो पूरे गॉव से दूध इकट्ठा करके बनारस मे बेचने लगे। ट्रेडिशनल खेती को वो एक हद तक कार्मशियल बनाना चाहे। सारा गॉव उनके दृष्टिकोणों से बड़ा प्रभावित हुआ। एक और सुन्दर वस्तु वो शहर से गॉव मे लेकर आएः शराव। मिलिट्री कोटे का थ्री एक्स रम वो अपने वईठका मे राजदरवार लगा कर खुल्लम खुल्ला पीने लगे। भोजापुर को थ्री एक्स रम का स्वाद बड़ा भाया। बाद मे उन्होने इस रम को भी अपने आमदनी का एक स्रोत बना लिया।

अचानक उनका ध्यान मास्टर साहब के पिछवाड़े की डीह पर गया। उन्होने तत्काल कुछ ज्यादे मजूरी पर दस अगल बगल के गॉवो से मजदूर पैदा किया। भोजापुर का कोई मज़दूर इस डीह को गिराने के लिए तैयार ही न हुआ। डीह का गिरना शुरू हुआ। लोग बाग बताते हैं कि फावड़े की हर मार पर सैकड़ों की तायदाद मे भरभरा कर विच्छू और सॉप निकल कर रामजनम पंडित के मकान के बगल वाली पोखरी की तरफ दौड़ पड़ते थे. जिन्हे दौड़ा दौड़ा कर लाठियों से कूचा जाता था। सॉपों. विच्छूओं के अलावे कई नेवले भी बेघर हुए। इस डीह मे सैकड़ों हडियॉ भी मिलीं. जो जानवरों की न होकर इन्सानो की थीं। धनवीर बाबा इसी अहाते मे एक बड़ा सा गढा खुदवा कर सारी हडियॉ उसमे फिकवाते जा रहे थे। डीह गिर चला था। अब वहॉ एक समतल साफ सूथरी जमीन थी। धनवीर बावा उसे कॅटीली तारों से घिरवा कर वहॉ एक छोटा सा बगान बनवा कर करैला भिन्डी गोभी टमाटर पालक जैसी सब्जियॉ लगवा दिये। भोजापुर मे सब्जियों के नाम पर आलू. कटहल और कोंहड़े के अलावे मिलता भी क्या था!

एक दिन तड़के सुवह वो मेढ पर खड़े अपनी खेतों का मुवायना कर रहे थे कि अचानक उनकी नज़र एक काले नाग पर पड़ी. जो ठीक उनके सामने अपना फन काढे अपनी पूॅछ पर खड़ा था। मेढ पर उनका पैर फिसला और वो अपनी लम्बी चौड़ी काया लिये अपनी ही खेत मे उलट पड़े। उनके तलुए मे इस सॉप के तीन दंश पाए गए। कई गॉवों के ओझा उनके इलाज के लिए दौड़े। उन्हे किलो के हिंसाब से केचुए पीस पीस के पिलाया गया। नीम की ताजी पत्तियों का झाड़ू उनके बदन पर फेरा गया। उनकी जान तो ओझाओं ने बचा ली लेकिन उनके दॉयी वॉह का पलस्तर कई महीनों के वाद जाके हटा। टूटे वॉह की हडियॉ फिर भी ठीक से न जुट पाई और न जुट सकीं।

इसके पहले कि उन्हे दूसरा नाग दिखता. उन्होने डीह मे पाई गई हडियों के गढे पर एक समाधि बनवा दी. जिसे अभीं तक कोई नाम न मिला था। चूॅकि हिन्दू अपनी लाशें जलाते हैं. गाड़ते नही है. उन्होने इस समवेत और सामूहिक कब्र के पीछे किसी एक मुसलमान को दोषी ठहराया. पर मृतकों को उन्होने शहीद का फतवा देते हुए इस समाधि को शहीद बाबा की समाधि का नाम दिया। पच्चास ईटों से बनी ये समाधि हर वर्ष रंगी पोती जाती है और हर शाम को वहॉ एक दिया जलाया ही जाता है. वरना धनवीर बाबा वहॉ अपनी पत्नी को भेजकर दिया जलवाते हैं। वहॉ खुद जाने की हिम्मत वो अपने मे नही जुटा पाते। अपनी खेतों का दैनिक मुवायना करना भी वो बन्द कर दिये। इसके बाद उन्हे कोई दूसरा नागराज तो नही टकराया. लेकिन पहला नागराज उन्हे इतना डरवा गया कि वो अपना अहाता ही न छोड़ते थे और शाम होने से पहले ही चार पॉच गैस की लालटेनें अपने अगल बगल मे जलवा लेते थे।

मास्टर साहब के बईठका की पिछली दीवार पर कई मोटी मोटी दरारें पड़ चली थी जिसके ढहने का इन्तजार हम वर्षो से कर रहे हैं। इसके दस वीस ईटें तो हर बरसात मे ही भरभराकर गिर पड़ते हैं. पर मिट्टी की दीवारें तमाम दरारों के बावजूद अक्षूत खड़ी है।

पक्की सड़क से भोजापुर तक आने वाले इस रास्ते का नाम नहरवाला रास्ता है और वसस्टैंड का नाम मात्र नहर है। भोजापुर का दूसरा रास्ता दक्खिन

दिशा से आता है. जिसे मढईला वाला रास्ता कहते हैं। इस रास्ते से सकलडीहा रेलवे स्टेशन से आने वाला रास्ता भी आ मिलता है फिर ये समवेत रास्ता गॉव तक आता है। गॉव के इस छोर पर एक बहुत ही पुराना पीपल का पेंड़ है. जिसके नीचे का चबूतरा काली माई का चबूतरा कहलाता है। ठीक इसके दॉई तरफ एक पोखरा है. जहॉ शिव जी का एक छोटा सा मंदिर है। मंदिर से लगा ही गॉव का पक्का प्राइमरी स्कूल हे। गॉव के इसी छोर पर दस बीस अहीरों के परिवार बसे हैं. जिनकी भैंसे रास्ते के बगल वाली पोखरी मे नहाती रहती हैं. जो सालों भर जल कूम्भियों से भरी होती हैं। फिर आता है एक कुऑ. जहॉ से घरों मे पानी तो जाता ही है. उसके चबूतरे पर लोग नहाते भी है. जिसका पानी रास्ते पर आकर जमा होता है। रास्ते का कीचड़ गर्मि यों के दिनो मे भी नही सूखता। इस कुएँ से लगा ही गॉव के बनिये बिन्देसरी की दुकान है जिसमे दिन के समय मे भी ढिबरी जलती रहती है। गल्ले पर बैठी उसकी पत्नी या जवान बेटियों की छींटदार भड़कीली चोलियॉ दुकान के बाहर से देखी जा सकती हैं। फिर आता है मास्टर साहब का तीन मंजिला सफेद मकान. जो भोजापुर का पहला पक्का मकान था। मास्टर साहब तो ये हवेली बनवा कर गुजर गए. पर इस हवेली का रंगरोगन और उसकी मरम्मत उनके भाईयो या औलादों के वश की बात नही थी। उसकी दीवारों मे जगह जगह दरारे पड़ रही थी। पलस्तर झड़ रहे थे और कई जगह से बुर्ज टूट चले थे। इस हवेली के सामने एक गन्दी पोखरी है जिसमे आसपास के घरों का कचरा बहता है। ये पोखरी भी सालों भर जल कूम्भियों से भरी रहती है फिर भी इसमे दो चार भैंसे पसरी रहती है। इसके किनारों पर गॉव भर के बच्चे हगने आते हैं। इस पोखरी को घेरे हमारा. गिरधर सिंह और रामजनम सिंह के पुश्तैनी मकान हैं। हमारे मकान के सामने भी एक पक्का कुऑ है. जिसके पानी से पूरे गॉव की दालें पकती हैं और उसके चबूतरे पर पूरा गॉव कपड़े कचारने आता है। पूरे गॉव मे यही एकमात्र कुऑ है. जिसका पानी बरसात मे भी पाताल तक गया होता है। इस पोखरी के सामने एक नीम का पेंड़ है. जिसका दतुअन भी आधा गॉव चुभलाता है। इसी के नीचे हमारे गायों बैलों और भैंसों की झोपड़ियॉ हैं। इससे लगी एक साफ सूथरी मंड़ई भी हमारी है जहॉ मेरे चाचा जब तब अपने मेहमानों से मिलते हैं।

सकलडीहा स्टेशन पर सिर्फ पसिन्जर गाड़ियॉ ही रूकती हैं। भोजापुर के लोगों को सकलडीहा के स्टेशन से ज्यादे वहॉ का विश्वनाथ मंदिर जोड़ रखा है. जहॉ गॉव के सारे बच्चों के मुंडन ही नही बल्कि पता नहीं कौन कौन से चढावे चढाए जाते हैं। मंदिर मे स्थापित शंकर भगवान से अधिक उनके गले मे लिपटा नाग जाग्रत बताया जाता है।

अन्ग्रेजों के समय इस इलाके मे रेल की पटरियॉ बिछाई जा रही थीं। मीलों लम्बी पटरियॉ बिछाई जा चुकी थीं। सारा काम एक अन्ग्रेज इन्जीनियर की देख रेख मे चल रहा था। जब पटरियॉ सकलडीहा तक पहुँचीं. तब अचानक उसकी नजर एक खन्डहर पर पड़ी. जो कभीं एक मंदिर रही होगी। अब उसके नाम पर अब बस एक मलवा बचा था। इस मलवे के ढेर मे शंकर भगवान की एक साबूत मूर्ति पाई गई। मंदिर ठीक पटरियों की सीधाई मे खड़ा था। मीलो बिछी पटरियॉ उखाड़ी नही जा सकती थी। इसलिए उस अन्ग्रेज इन्जीनियर ने मंदिर को ढहवा देना चाहा। इसके पहले कि मजदूर अपना फावड़ा सम्हालते. वहॉ हजारों की भींड़ जमा हो गई। सबकी हॉथों मे गोजी बरछी थी। इन्जीनियर ने अपने तमन्चे से दो चार हवाई फायर भी किये. पर वहॉ की भींड़ न छंटी। अपने को असहाय पाकर उसने दो मज़दूरों को इशारा किया और पटरियों पर खड़ी अपनी ट्राली मे जा बैठा. जिसे वो धकेलते देखते ही देखते ऑखोा से ओझल हो गए। बाकी मज़दूर दो चार डंडे खाके. जिसे जो भी दिशा दिखी भाग खड़े हुए। लोगों की भींड़ मंदिर पर धरना देकर बैठ गई।

इसी तारीख़ की रात में इस इन्जीनियर को उसके कैम्प मे एक काला नाग धर दबोचा और अपना सारा विष उसके बदन मे उतार गया। सुबह लोगों को इस इन्जीनियर की बस एक नीली लाश ही मिली। मंदिर पर धरना देने वालों मे से कईयों ने अपनी ऑखों से शंकर भगवान के गले मे लिपटे नाग को जीवित होकर सरकते कहीं जाते देखा था और कई घन्टों बाद वापस आकर फिर उनके गले मे लिपटकर मूर्ति बनते देखा था।

दूसरा इन्जीनियर एक बूढा अन्ग्रेज था और बनारस मे वर्षो से रह रहा था। उसने आते ही तमाम बिछी पटरियॉ उखड़वा कर मंदिर के बगल से पटरियों के बिछवाने का आदेश दे डाला। सैकड़ों समीपवर्ती गॉवो के लोग चन्दा इकट्ठा करके शंकर भगवान की मूर्ति को एक संगमरमर के मंदिर मे स्थापित करके उनकी सेवा मे एक पुजारी जी को बिठा दिये।

पसिन्जर ट्रेने या मालगाड़ियॉ मंदिर के अहाते की एक दीवार को रगड़ती गुजरती हैं। आज तक के दिन लोग बताते हैं कि शंकर भगवान के नाग को इन ट्रेनों का शोर नही भाता। उनकी गड़गड़ाहट से उसके स्वामी ढंग से सो नही पाते हैं। जब तब वो अपने स्वामी के गले से सरक कर पटरियों पर जा खड़ा होता है और अपनी पूँछ पर खड़ा होकर फूफकारता रहता है।

सकलडीहा स्टेशन का एक और नाम है बट्ठी. जो धरना पर हजारों लोगों के कई दिनों तक दिन रात **बैठने** का अपभ्रंश है। इस बट्ठी से चले रास्ते पर एक पुलिया है. जिसपर अन्धेरा घहराते ही भूत आकर बैठ जाते हैं और वहॉ से गुजरने वालों से अपनी नकियाती आवाज मे खैनी मांगते है और न मिलने पर बगल की खेतों मे उन्हे ले जाकर तबियत से कूटते हैं। इन सभी के पैर उल्टे होते हैं और ये हर मौसम मे बस लन्गोटा बॉधे रहते हैं। थोड़ा आगे बढने पर एक बैर का बागीचा आता है. जो हमारा है। इसके सामने की पटरी पर भोजापुर के ही नही. आसपास के कई लोग आकर आत्महत्या कर चुके हैं। अन्धेरा होते ही हमारी बैरो की पेंड़ो से कई लाशें आकर लटक जाती हैं।

भोजापुर मे एक अहीर परिवार मे दो भाई रहते थे। उनके पास जमीनें तो ज्यादे न थीं. पर दोनो बड़े मेहनती थे। उनके पास तीन भैंसें भी थीं। भैंसों का काम उनकी पत्नियॉ देखती थीं। सामूहिक परिवार था। दोनो भाई तो बस एक दूसरे पर जान ही छिड़कते थे। उनकी पत्नियॉ भी एक दूसरे से बड़ा स्नेह रखती थीं। दोनो भाई बड़े हॅसमुख मिलनसार और हमेशा पूरे गॉव के सुख दुख मे सबसे आगे रहते थे। इनका किसी से झगड़ा न था। बड़े बूढों से ये दोनो उनके पैरों पर अपनी पगड़ियॉ धरकर उनका आर्शीवाद लेते थे। बदचलन और किसी तरह का ऐब तो उन्हे दूर से भी न छूआ था। उन्हे कसरतों का बड़ा शौक था। अपने काम निपटा कर नियम से ये अपने बईठके के अखाड़े मे लन्गोटा बॉध कर दंगल मे जुट जाते थे और उनके दर्शक होते थे उनके अपने बेटे. जो उन दिनो चार और पॉच वर्ष के थे। इन दोनो भाईयों को रूप. कद और स्वभाव ईश्वर ने उनकी मॉ के जरिये तौल तौल के बॉटा था।

एक दिन की बात हैःबड़ा भाई दो लन्गड़े आम लिए घर वापस आया और बच्चों को आवाज लगाई। उसका बेटा उसे बाऊ कहके दौड़ा। उसके पीछे पीछे उसके छोटे भाई का बेटा भी। वो भी उसे बाऊ ही कहता था।

ःदू ठे आम ह।केके दॉये हॉथ क.केके बायें हॉथ क दीं!दो आम है।किसे दॉये हॉथ वाला और किसे बॉये हॉथ वाला चाहिये!वो अपना दोनो हॉथ पीछे छिपाए बच्चों से पूछा।
जब उसके छोटे भाई के बच्चे ने बॉयी हॉथ वाला आम मांगा तो उसने पीठ पीछे आम बदल कर एक आम उसके हॉथ पर धर दिया.जो थोड़ा सा छोटा था।उसका छोटा भाई ये सब कुछ एक खिड़की से देख रहा था।
जब दोपहर के खाने पर दोनो भाई साथ खाना खाने बैठे तब छोटे भाई ने बंटवारे की बात चलाईःभईया इसके पहले कि हमारे बीच अपने और पराये का विषभरा बीज अंकुरित होके एक झाड़ बने.हमार अधिया हमै दे दा।
बड़े भाई के हॉथ का कौर हॉथ मे ही धरा रह गया।वो चुपचाप उठा और अपने हॉथ धोकर कहीं चल पड़ा।
थोड़ी ही देर मे गॉव का ही एक नाई दौड़ता भागता चिल्लाते गॉव आयाःमनोहर क लाश बाबू बेचन सिंह के बईर क बगईचा के सामने वाले पटरी पर पड़ल ह।सर धड़ से एक दम अलग।
इसी मनहूस दिन मनोहर का छोटा भाई सरोहर ही नही.उसकी पत्नी और भवज भी अपने बच्चों के साथ पटरियों पर जाकर सो गई। मालगाड़ी को इनमे से एक पर भी दया न आई।बस छोटे भाई का बेटा चन्दन मालगाड़ी को आते देखकर अपनी मॉ की जकड़ छुड़वाकर भाग दौड़ा।
इस खूनी दिन ने भोजापुर के पॉच अच्छे इन्सानो की जाने लेकर ही चैन की सॉस ली।चन्दौली थाने का थानेदार ये रात हमारे बईठके मे ही बिताया।इस परिवार की मौत भोजापुर की एक समवेत क्षति थी।दूसरे दिन चार ट्रैक्टरों से इनकी लाशें बनारस ले जाई गई।पूरा भोजापुर बिना किसी जात पॉत का भेद भाव जाने जत्थे बना कर बनारस गया।सभी की मुखाग्नि चन्दन से ही करवाई गई।
इसके पहले भी कई बार हैजा के प्रकोप ने कई घरों के दरवाजों पर सांकल चढवाई थी.पर इस परिवार ने भोजापुर को बेहद रूलाया।आज भी वहॉ मनोहर और सरोहर के बीच के प्रेम की तुलना राम और भरत के बीच के प्रेम से होती है और उनका नाम बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है।उनका नाम भी भोजापुर ने मनोहरा या सरोहरा कहके कभी न बिगाड़ा.उनके जीते भी नही और उनके न रहने के बाद तो उनके नाम के पीछे जी तक जोड़ा जाता है।
बट्ठी से एक रास्ता बढवल गॉव से होते हुए भी भोजापुर आता है।रास्ते मे एक पांड़े जी का पोखरा भी पड़ता है.जो हर तरफ से बिज्जू आमों के पेंड़ो से ढॅका तोपा है।बड़ा साफ सूथरा पोखरा है.लेकिन इसमे सिर्फ प्रेतनियॉ ही नहाने आती हैं।इस पोखरे का पानी तो नजर नही आता पर इसके तट पर दिन मे चारो ओर सूखने को पसारीं सफेद साड़ियॉ देखी जा सकती है और इस पोखरे मे नहाने वालों की छप छप की आवाज तो दूर से भी सुनी जा सकती है।गई रात तक इस पोखरे पर प्रेतनियॉ गाती और नाचती होती है.जिनकी बगबग करतीं सफेद साड़ियों के आंचल हवा मे लहाराते रहते हैं।
इस पोखरे से थोड़ी ही दूर पर दूर दूर तक फैले खेतों के विस्तार मे एक काली माई का मंदिर है.जिसमे काली माई की एक मूर्ति सिन्दूर से सनी और नहाई खड़ी हैं.अपना एक पैर शंकर भगवान के छाती पर धरे.अपनी लाल जीभ निकाले।शंकर भगवान अपनी ऐंठी मूॅछ लिये जमीन पर पड़े हैं।इस काली माई से आसपास के हर छोटे नवजात बच्चों की मौते जोड़ी जाती हैं।उनके चौखट पर मैने हर उम्र की औरतो को अपना सिर पटकते आर्त्तनाद ही करते देखा।औरतें राग पाकर रोती हैं जो बड़ा ही भयावना होता है।औरतें उन्हे अपना बहन ही कहके उनसे अपने बच्चे की मौत का कारण पूछती हैं।
बट्ठी से आने वाले दोनो रास्ते बस जोखिमों से भरे रास्ते हैं।भोजापुर के लोग उस तरफ की रूख तभी लेते हैं.जब आधे से ज्यादे गॉव वहॉ साथ चलने के लिए तैयार होता है और वो भी दिन के उजाले में।भोजापुर मुंडन और श्राद्ध के नाम पर ऐसे अवसर ढूॅढ ही लेता है।
भोजपुर के दक्खिन दिशा की सरहद पर एक डिगबाबा नामके लंगड़े पुण्यात्मा चौकीदार की तरह डटे रहते हैं।उनकी चौकीदारी मे भोजापुर मे किसी भूत प्रेत का इस दिशा से आना वर्जित है।पूरब मे चौकीदारी भवानी माई.पश्चिम मे काली माई और उत्तर मे एक पुजारी बाबा करते है जिन्हे पता नही चोर क्यों कहा जाता है!
भोजापुर का हर बच्चा ही नही वहॉ का हर जवान और हर बूढा अपने चार पहरेदारों के सम्मान मे एक एक गीत अहर्निश गाता हैः...
काली मईया करिया.भवानी माई गोर.डिग बाबा लंगड़.पुजारी बाबा चोर।
मै भोजापुर हर रास्ते से मास्टर साहब के हवेली तक जाना चाहा।मुझे बस एक ही रास्ता सुरक्षित लगा.नहर वाला रास्ता.जहॉ मुझे जब तब दो चार पनैले सॉप ही दिखे।भवानी माई ने मुझे इस रास्ते पर इनके अलावे और कुछ भयावना न दिखाया।
मास्टर साहब की हवेली बाहर से जीर्ण शिर्ण हो चली थी.पर इसके अन्दर एक लम्बा चौड़ा परिवार रह रहा था।उनकी पत्नी.जिन्हे हम मस्टराईन आजी कहते थे.अपने और अपने दो बच्चों का हिस्सा हवेली के सामने वाला भाग लेकर बॅटवारा करवा कर लीं.जो अभीं भी अच्छी हालत मे था।वो अपने छोटे बेटे खुड़बुड़ के साथ खेती मे आ गई।उनका बड़ा बेटा बसावन उत्तर प्रदेश के एग्रिकल्चर डिपार्टमेन्ट मे किसी एक अधिकारी पद पर थे।उन्होने गॉव के कई थर्ड डिवीजन से पास एग्रिकल्चर के ग्रेजुएटों या पोस्टग्रेजुएटों को सरकारी नौकरियों मे लगवाया|ये पूरा भोजापुर जानता है।भोजापुर मे उनका नाम बहुत ही सम्मान के साथ लिया जाता है।
इसी परिवार मे एक प्रधान साहब थे.जो अपने छोटे भाई के साथ पूरे परिवार की समवेत खेती देखते थे।उनके छोटे भाई बट्ठी के किसी प्राइमरी स्कूल मे टीचर भी थे।इनके दूसरे चचेरे भाई बनारस और बनारस के समीपवर्ती जिलों मे सरकारी नौकरियों मे थे और सिर्फ छुट्टियों मे ही गॉव आते थे।कई यों की पत्नियॉ गॉव मे ही रहती थीं।प्रधान साहब खेती के अलावे अपनी बईठका मे बैठ कर पूरे गॉव का सुख दुख सुनते थे।इस पद के लिए उन्हे पैसे तो न मिलते थे.पर उन्हे एक अतिरिक्त सम्मान मिला हुआ था.जिसे गॉव के किसी तबके का कोई भी उनसे कभीं न लेना चाहा।बड़ा सादा और सन्त जीवन था उनका।उनकी पत्नी के हाथों मे पूरे घर गृहस्थी का भार था।उन्हे हम बड़की माई कहके बुलाते थे।प्रधान साहब को दो बच्चे थे।वर्षो वो घर के बाहर ही नही.परिवार के भी सारे दायित्व निभाते रहे।अपना पराया तो वो ऐसे भी न जानते थे।परिवार के ही नही बल्कि गॉव के सारे बच्चे उन्हे अपने सगे बच्चे जैसे ही प्रिय थे।मुझे वो शेरवा कहके बुलाते थे।
समय के साथ दूसरे कई परिवारों की तरह इस परिवार पर भी बॅटवारे का काला बादल मंडराया।मस्टराईन आजी ने बॅटवारे की पहल क्या की कि इस परिवार मे सगा भाई तक अपने सगे भाई के साथ रहने को राजी न था।बॉटने के नाम पर इस परिवार मे जमीने भी ज्यादे न थीं।इनके समवेत खेत

मेढों से भर चले थे। मास्टर साहब की हवेली मे जिधर देखो उधर ही दीवारें. जहॉ कमरे बॉट कर भी रहा जा सकता था। इन सारे भाईयों के दरम्यान वर्षो से पता नही कौन सा वैमनश्व पल रहा था कि एकबारगी ही ये एक दूसरे के लिए अन्जान हो गए। ऐसा वीभत्स बॅटवारा भोजापुर के किसी दूसरे परिवार मे न देखा गया। मस्टराईन आजी तो फिर भी अपने दो बेटों की जमीन पर थोड़ा बहुत पैदा कर लेती थीं. पर दूसरे भाईयों की खेतों मे खड़ी फसलों का एक एक पौधा तक गिना जा सकता था। इनकी हालत तो सही अर्थो मे मजदूरों से भी बदतर थी। इनमे दो विधुर भी थे। दोपहर और शाम मे खुद ही चूल्हे पर कन्डे की आग जलाकर खाना पकाने बैठ जाते थे। ये अपना खटिया बिस्तर भी अपने हिस्से के कमरो मे बन्द रखते थे। इनके बाल बच्चे तक गॉव आना बन्द कर दिये। गॉव भी आकर वो क्या करते!कहॉ ठहरते!

प्रधान साहब के अलावे इस परिवार के दूसरे तो ऐसे भी भोजापुर मे प्रिय न थे. पर न्योता हॅकारी तो ऐसे भी हमेशा समवेत ही जाता है जिसकी वजह से शादियों या दूसरे अवसरों पर ये दिख जाते थे। पर बॅटवारे के बाद तो भोजापुर ने इन्हे ऐसा बिसराया कि भोजों मे मिलने वाली मूछी बरी तो इनके लिए एक सपना ही बन गया। प्रधान साहब का सम्मान और उनका पद वैसे ही बना रहा। बड़की माई के पास अब फुर्सत ही फुर्सत थी। वो गॉव भर का फेरा ही मारती रहती थीं। उनकी बेटी को भी अपनी सहेलियों से फुर्सत न थी। उनका बेटा जब भी गॉव आता था. हर परिवार मे जाकर उठ बैठ आता था। एम एस सी एग्रीकल्चर करने के बाद उसे प्रतापगढ मे एक नौकरी मिल गई थी. पर उसने अभीं तक शादी न की थी। उसे कोई रिश्ता ही पसन्द न आ रहा था।

ऐसे लोगो के प्रति भोजापुर के देवी देवता हमेशा ही एक कड़ा रूख अपनाए। कोई भी आया रिश्ता ठुकराने पर भोजापुर सिर्फ श्राप ही देना जानता है। इस गुनाह की सजा विना किसी अपवाद के हरेक को मिली। बतौर सजा मोटी. तुतलाती. दॅतुली. काली कलूठी और बॉझ दुल्हनो की डोलियॉ ऐसे ही घरों के सामने जाकर रूकीं। ऐसे दुल्हों और उनकी माताओं का आर्त्तनाद मै बचपन से ही न सिर्फ अपने परिवार मे वल्कि दूसरे परिवारों मे भी देखता सुनता आ रहा था।

प्रधान साहब के गोरे बदन के छहररे सरकारी नौकरी मे आए बेटे को भी भोजापुर ने श्राप देने से पहले यहॉ तक कि उनके बाप की सेवाओं तक को दरकिनार कर दिया। अब एक आर्त्तनाद मुझे और सुनना था। गॉव की औरतें बस यही कहती घूमती फिरती थींःइहां तक कि काली माई भी प्रधान साहब के बहू से उज्जर हईं...ःयहॉ तक कि काली माई भी सरपंच साहब की बहू से ज्यादे गोरी हैंः

पत्नी का तिरस्कार भोजापुर की कभीं से प्रथा न रही। वो हर दुल्हे से एक स्पष्ट भाषा मे बस इतना ही कहता थाःएक ढोल मैने तुम्हारे गले मे बॉध दिया है जिसे तुम्हे जीवन भर बजाना है. चाहे गाते हुए या कलपते हुए।

प्रधान साहब के बेटे भी अपनी पत्नी को ढंक तोप के प्रतापगढ अपनी नौकरी पर ले गए। भोजापुर के व्यंग्यवाण से वो कम आहत हुए थे क्या!अब उन्हे अपनी नौकरी पर फलानो की फलानियों के ऐसे ही व्यंग्यवाण झेलने थे गोकि उनके ऑसू अभीं तक न सूखे थे।

समय के साथ प्रधान साहब की बेटी की भी शादी हो गई। उसका ससुराल आजमगढ जिले के एक छोटे से गॉव मे था। उसके पति जौनपुर के एक इन्टरमिडिएट कॉलेज मे अध्यापक थे. पर अपनी पत्नी को नौकरी पर रखना उनके लिए संभव न था। गॉव के ढहते मकानो की मरम्मत के लिए उनका ही नही उनके छोटे भाई के भी तनख्वाह का एक बड़ा भाग उनके पिता हॅथिया लेते थे।

पता नही प्रधान साहब की बेटी को कितने वर्ष गॉव मे विताना पड़ा और अपनी सास और देवरानी के साथ वहॉ के चूल्हे चौके मे अपनी ऑखें फोड़नी पड़ीं।

मै देख रहा था कि अब भोजापुर से लड़कियों की शादियॉ कम होती जा रही थीं। लोग बाग अपनी लड़कियों की शादियॉ बनारस से करते जा रहे थे। घरातियों और बारातियों को वो बनारस के किसी स्कूल या कॉलेज मे ठहराने लगे थे। मज़दूरी पर हलवाई रख लिए जाते थे। परम्परागत शादियों के कई चरण लोप हो चले थे। दूसरे दिन ही बारात को विदा लेना पड़ता था। अब तीन दिन तक बारात को टिकाना भोजापुर के सामर्थ्य मे न था। कहॉ ठहराते वो बारातियों को!आमों के बगईचा तक सूख चले थे। पोखरे पर दो कमरों के प्राइमरी स्कूल की छत बस आज कल मे ही गिरने वाली थी। भोजापर मे न चूल्हो मे जलाने को लकड़ियॉ बची थीं न तो उनपर पकने वाले कटहल ही कहीं दिखते थे। कटहल पकाने वाले पारस बाबा भी सन्यासी हो चले थे। शादी व्याहों मे कोई अपने बर्त्तन और दरियॉ तक देने को तैयार न था। खटिया बॅसहटी तक के लाले पड़े हुए थे।

मुझे वो समय भी याद है. जब भोजापुर किसी लड़की की शादी तय होने की बात सुनते ही जग जाता था। दरियों बर्त्तनो के ढेर लग जाते थे। गॉव के खटिक लकड़ियॉ चिरने मे लग जाते थे. कुम्हार पत्तल और पुरवे बनाने मे लग जाते थे. अहीर अपने औंटे दूध मे दही का जोरन डालने मे लग जाते थे. मुसलमान बढई बॉसों से विवाह स्थल बनाने मे लग जाता था. जिसके आसमान को छूती सिरों पर तरह तरह की पताकायें लहराने लगती थी। रोज ही वो अपने हॉथों से कभी कोई चिरई तो कभीं कोई चरखा तराश कर विवाह स्थल की सजावट मे लगा रहता था। बारात की अगवानी मे दुनालियॉ साफ होने लगती थीं। गॉव का धोवी भगेलू कुर्त्ते की बॉहों मे चुनट देने लग जाता था। बारातियों की अगवानी पूरा गॉव समवेत करता था। उनकी तीन दिनों की सेवा मे पूरा गॉव लग जाता था। गॉव के सारे कॅहार कुओं के चवूतरों पर जा चढते थे। पारस बावा. जमुना सिंह. कन्हई सिंह. मूसन सिंह जैसे कई जीवट लोग चूल्हे छोड़ कर तीन दिन तक हटते ही न थे। चिल्ला चिल्ला कर सभी अपना गला बैठा लिये होते थे। भोजापुर की लड़कियॉ पूरे गॉव से विदा लेकर ही गॉव छोड़ती थी। तीसरे दिन की सुबह भोजापुर मे ऑसुओं की एक बाढ आती थी। काली माई के चबूतरे तक पूरा गॉव बारातियों को छोड़ने जाता था। हर लड़की गॉव की लक्ष्मी होती थी जो भोजापुर को कई दिनो तक निर्धन बना के चली जाती थीं।

एक दिन सुबह मै अपने चाचा के साथ अपने कुएँ की एक डरार पर बैठा नीम की दतुअन चुभला रहा था कि बड़की माई भागती दौड़ती हमारे पास आईं। उनका ऑचल जमीन पर लसड़ा रहा थाःप्रधान साहब के रातै से दस्त लगल ह। बन्द होवै का नाम तक ना लेत ह। बनवारी बाबू के बुलावै के पड़ी।

मेरे चाचा घवरा गए। जब मेरे चाचा घवरा जाते हैं. तब वो सिर्फ खड़ी भाषा मे ही हिन्दी बोलते हैंःप्रमोद को अभीं मै सायकल से सकलडीहा भेजता हूँ। फौरन बनवारी को बुलवाता हूँ। आप जाकर भईया की ॲगोछी धोती साफ करें. कहके वो मुझे अपना आदेशात्मक निर्देश दियेःतुम बैठके मे जाके वो मिलिट्री वाली सायकल लेकर फौरन सकलडीहा चले जाओ। बनवारी अगर ना नुकूर करे तो उससे कहना मेरे पीछे मेरे चाचा ट्रेक्टर से आ रहे हैं। वो

अपनी लाल पीले पानी से भरी बोतलें बॉध ले और अपना जाली सर्टिफिकेट अपने माथे पर चपका के पतरातू भाग ही ले।
बड़की माई जा चुकी थीं।
मैने चाचा से पूछाःआप कौन सी सायकल की बातें कर रहे हैं!बैठके की सायकल के एक भी पहिये मे हवा नही है।उसे कन्धे पर लेकर मै सकलडीहा दौडूं!
ःनही भाई ये लो ट्रेक्टर की चाभी और आराम से सकलडीहा जाना।किसी गढे मे ट्रेक्टर मत उतार देना।पर उस बनवरिया को लेके ही आना।पता नही दस्त पेसाब मे भउजी को उस जालिए की क्या जरूरत आ पड़ी है!
मै ट्रेक्टर दौड़ाता भगाता सकलडीहा पहुँचा और डाक्दर बनवारी के प्रेक्टिस के सामने लगी चौकी को रगड़ते अपनी ट्रेक्टर रोका।चौकी एक गन्दे पनारे के ऊपर रखी थी।
मुझे बनवारी गुप्ता नही जानते थे.पर चाचा का ट्रेक्टर वो पहचान गए।बड़े आदरपूर्वक वो मुझे चौकी पर बैठने को कहके मेरे चाचा का हालचाल पूछने लगे।संक्षिप्त मे ही उन्हे चाचा का हालचाल बताकर मैने उन्हे अपने सकलडीहा आने का कारण बताया।
डाक्टर साहब फटाफट अपनी दुकान समेटने मे लग गए।पहले वो चौकी पर की मटमैली चादर तहियाए.फिर एक कुर्त्ता पहने जिसकी जेब मे वो अपना स्टेथोस्कोप.सिरिन्ज और दो चार दवाईयों की शीशियॉ घूसेड़े।दुकान की कुंडली पर एक भारी भरकम ताला लगाके चाभी अपनी जनेऊ मे बॉधे और आ कर ट्रेक्टर पर मेरे बगल मे बैठ गए।
मै उन्हे लिए प्रधान साहब के पास पहुँचा।डाक्टर बनवारी गुप्ता को देख कर बड़की माई की सांस मे सांस आई।वो रोते कलपते उनसे अपने पति के जीवन की भीख मॉगने लगी।
पहले तो डाक्टर बनवारी ने बड़की माई से तन्मय होकर प्रधान साहब के पिछले तीन दिनो का जीवन चरित आद्योपान्त सुनाःवो क्या खाए.क्या पीए.किससे मिले.कब सोए.कब जगे.कहॉ कहॉ गए!
फिर वो पुरोहित की तरह बुदबुदा कर संस्कृत मे कोई मंत्र पढ कर बड़की माई को थोड़ा पानी गरम करने को कहे।बड़की माई अपने दाल वाले बटलोहिये मे पानी गरम कर लाई.जिसके बाहरी आधे हिस्से पर भींगी राख का लेप लगा था।जब डाक्टर बनवारी अपना खूनी सिरिन्ज बटलोहिये के गरम पानी मे डाले तो मै चौंका।सिरिंज की सूई पर मोर्चे ही मोर्चे लगे थे।अब वो इन्जेक्शन की तैयारी मे लगे थे।डिस्टिल्ड वाटर की शीशी भी वो खटिए की गोड़ी से मारके तोड़े.जिस पर प्रधान साहब बेसूध अधनंगे लेटे थे।खटिए की निवाड़े सरका कर बड़की माई उनके पायताने नीचे एक खाली बाल्टी रखी थीं।पूरे कमरे मे एक खट्टेपन की बास थी।
प्रधान साहब को इंजेक्शन लगा।बड़की माई के हॉथ पर पता नही किन टैबलेटों की दो शीशियॉ धरकर डाक्टर बनवारी उन्हे उनकी खुराकें समझा कर मेरे साथ नीचे आए ही थे कि बड़की माई के आर्त्तनाद से मास्टर साहब की हवेली और डाक्टर बनवारी की टॉगें तक कॉपने लगी।
अब मुझे ही उनसे कहना पड़ाःआप अपनी फीस वीस तो भूल ही जाइये।इसके पहले कि बड़की माई अपना धारदार पॅहसुल लेकर नीचे पहुँचे.भाग कर जल्दी से कोई बस नहर पर से ले लो दुष्ट।ये अपना जाली सर्टिफिकेट रॉची के किस प्रेस मे छपवाया था!
तीन चार मिनट अपने जीवन से संघर्ष करने के बाद प्रधान साहब तो अपनी ऑखें मूंद लिए.पर ये कमीना बनवारी आज तक सकलडीहा मे अपनी दुकान खोले बैठा है और अपने नमक और चीनी की पूड़िया लोगों के बीच बॉटता रहता है।इतना ही नही सकलडीहा मे वो एक एम बी बी एस किये एलोपैथ की प्रेक्टिस फेल किए बैठा है।अगला एक ठेके पर देशी दारू से अपनी अंतड़ियॉ जलाता रहता है और डाक्टर का बच्चा ये बनवारी अपनी दुकान बन्द करके कभी किसी थानेदार के साथ तो कभीं किसी तहसीलदार के साथ व्हिस्की के जाम लगाता है।
ग्यारह बजे के आसपास एक पैसेन्जर ट्रेन सकलडीहा रेलवे स्टेशन से प्रतापगढ जाती थी।वहॉ से वापसी की एक ट्रेन तकरीबन तीन बजे के आसपास मुगलसराय पहँचती थी जिससे मुझे सरपंच साहब के बेटे को सपरिवार वापस भोजापुर लाना था।मै चाचा चाची के समवेत आग्रह को न टाल पाया और फटाफट कपड़े पहन कर सकलडीहा स्टेशन की ओर दौड़ पड़ा बिना किसी भूत प्रेत की परवाह किए।रास्ते भर मै हनुमान चालीसा की चार पंक्तियॉ दुहराता गया जो मुझे आज तक याद हैं जिन्हे घर छोड़ने से पहले मै रोज ही बिना किसी नागे के एक बार दुहरा लेता हूँ बिना किसी शुभ या अशुभ का ख्याल अपने दिल मे लाए।इन चार पंक्तियों ने मुझे क्या दिया या मुझसे क्या लिया इसका लेखा जोखा तो मेरे पास नही है.पर इन्होंने मुझे आज से पच्चीस वर्ष पहले सकलडीहा स्टेशन तक विचरने वाले हर अप्राणियों से दूर रखा।
प्रतापगढ मे सरपंच साहब के बेटे के पास एक सरकारी मकान था जिसमे मात्र एक कमरा और घेरा हुआ बरामदा था जिसके कोने मे एक नलका और उसके बगल मे ही पैखानाघर था।एक बजने को आए थे.पर खटियों पर अभीं तक मसहरियॉ लटक रही थीं।आखिरकार रविवार का दिन था।खिड़कियों और ताखों पर पता नही कब के पुराने अखबार बिछे पड़े थे जो रसोई के सामानो से भरे पड़े थे।पूरे गृहस्थी मे मुझे दो ही चीजें मूल्यवान दिखीं.गैस का स्टोव और एक ट्रान्जीस्टर।एक बार तो मै सोच मे ही पड़ गयाःइन तथाकथित शहरों मे भोजापुर के लड़के क्या ढूँढने आते हैं!दूसरे शब्दों मे इन शहरों का कौन सा आकर्षण उन्हे भोजापुर से दूर ले जाता है!भोजापुर मे तो ये अपनी छुट्टियों मे बगुले के पंखों जैसे सफेद धोती कुर्ते मे घूम घूम कर अपने शहरी होने का दम्भ भरते रहते हैं और प्रतापगढ मुरादाबाद रामनगर फैजाबाद आजमगढ और जौनपुर जैसे शहरों मे रहकर एक तरह से नारकीय जीवन ही तो बिताते हैं!
सरपंच साहब के बेटे अचानक मुझे अपने क्वार्टर के दरवाजे पर देखकर घबराने से ज्यादे शरमाये ही।मैने बिना किसी भूमिका के उन्हे बतायाःभईया एक घन्टे मे ही वापसी की एक ट्रेन है।बड़के बाबूजी न रहे।भईया तो उँकडू मारके अपनी लुंगी मे अपना सर छुपाए फुफकारी मारके रोने लग पड़े।भाभी को रोते देख कर उनके दो बच्चे भी रोने लग पड़े।
पिता की अकस्मात आई मौत ने उनके बेटे के जीवन मे आधे घन्टे के लिए एक ऐसा झंझावात लाया जो उन्हे ऊपर से नीचे तक नंगा कर गया।वो अपने खजांची बाबू को अपनी छुट्टी की दरख्वास्त देने नही गए थे।वो उनके पास एडवान्स पेमेन्ट के लिए गए थे.जो उन्हे न मिला।समय बड़ा कम था।भाभी एक लोहे के बक्से मे अपनी आधी गृहस्थी बॉधे अपने पति का इन्तजार सिसकते हुए कर रही थीं।भईया के पास दो चार सौ रूपये तो दूर

रहे. उनके पास किराये तक के पैसे न थे।
पिता की अर्थी उठनी है और उनके बेटे के पास घर मे एक फूटी कौड़ी तक नही है।बच्चे सजे सॅवरे बक्से पर उदास बैठे थे।भाभी भी अपनी जार्जेट या किसी पोलियाक्रिल की साड़ी पहने जब तब अपनी नाक एक रूमाल से पोंछे जा रही थीं।
भईया फिर मुझसे एक झूठ बोलेःछुट्टी की दरख्वास्त मंजूर नही हो पाई।लगता है कि हम तुम्हारे साथ नही चल पाएँगें।
मै अन्दर से तो बौखलाया. पर नम्र ही बना रहा और नम्र आवाज मे ही उनसे कहाःभईया मारिये गोली अपनी छुट्टियों को।समय हो चला है।अब चलते हैं।टिकट वगैरह के लिए मेरे पास पैसे हैं।
मुगलसराय से बस लेकर हम चन्दौली के रेलवे फाटक तक पहॅचे ही थे कि हमे प्रधान साहब की सजी सजाई लाश एक ट्रेक्टर पर दिखी जिसके पीछे मेरे चाचा अपनी हरी अॅगोछी अपनी नाक पर रखे चले जा रहे थे।ट्रेक्टर के पीछे नही भी तो कम से कम दो सौ से भी ऊपर लोगों का जत्था चल रहा था।कई अहीर भी भींड़ मे नजर आए।भईया बस से उतरकर ट्रेक्टर के पीछे भागे।भाभी और बच्चों को लिए मै भोजापुर वापस आया।
बड़की माई को घेरे गॉव की कई औरतें बैठी थीं।रो रोकर वो अपना गला बिठा ली थीं।जब वो अपनी बहू से भेंटी तो उनके गले से बस घू घू की ही आवाज आ रही थी।उनका रोना कई दिनो तक चला।उनके बेटे इधर उधर से कर्जा उधार लेकर अपने पिता की तेरही करवा कर सपरिवार प्रतापगढ की राह पकड़े।प्रधान साहब की बेटी भी भोजापुर मे लम्बा न टिक पाई।बड़की माई भोजापुर मे अकेली रह गई।अक्सर रात मे वो राग पाके रोती थीं जो मुझे बड़ा ही हृदयविदारक लगता था।मै अक्सर उनके बारे मे सोचता था।आगे का जीवन वो कैसे गुजार पाएँगी!उनके पति दो चार बिस्से जमीन और एक भयावह भविष्य के अलावे उनके लिए कुछ भी न छोड़ गए थे।सामने की गन्दी पोखरी न सिर्फ उनके कमरे की खिड़की. बल्कि कमरे की एक दीवार पर आई दरार से भी नजर आती थी।कमरे के सामने छत की रेलिंग बस हवा मे ही झूलती रहती थी।भाई भवज तो कब के अन्जान हो चुके थे।अब उनके दो चार बिस्से की खेती भोजापुर मे कौन मुफ्त मे करवाता!
बड़की माई गहरे सॉवली रंग की थीं।उनके लम्बे काले बाल आधे से ज्यादे सफेद हो चले थे जो कड़ुआ तेल या कभीं कभार लोमा के तेल से सने रहते थे।अपनी सूखी छाती वो अपने ऑचल से ढॅके रहती थीं।सरपंच साहब के गुजरने के बाद वो एक काले बार्डर की सफेद साड़ी पहनने लगीं।कलाई पर की दो चार कॉच की चूड़ियॉ तो वो कब का तोड़ चुकी थीं।
उन्हे अब अपने खाने पीने की भी परवाह न रही।दिन भर वो पूरे गॉव का चक्कर मारतीं और गई शाम मे सोये लोगों के बिस्तर के बगल मे एक ब्राम्हणी ऑवला के तेल की शीशी अपने हॉथ मे लिए खड़ी हो जातींःआप के माथा पर तनि तेल धर दीं!बत्थत होई।ःआप के सर पर जरा तेल रख दूॅ।दर्द करता होगा।ः
उनके भय से अब बईठके की दालानो के दरवाजों पर सॉकल तक चढने लग पड़े थे।
उनका हर घरों मे स्वागत होता था।खाने पीने से लेकर हुक्का तक के लिए उनसे पूछा जाता था।
सिर्फ एक बात पर भोजापुर का माथा ठनका।बड़की माई पता नहीं क्यों हर परिवार मे भूने चनो की पोटलियॉ छोड़ जाती थी!
धीर धीरे लोग एक संशय मे आते जा रहे थे।बड़की माई को डायन का फतवा तो न मिला. पर उनके सिर पर किसी आत्मा का वास हो चला है।लोगों का ये विश्वास दृढ होता चला जा रहा था।इस आत्मा को किसी ने कुपित न माना।सती सुहागन और एक ऊॅची जात की विधवा पर किसी कुपित आत्मा का वास हो ही नही सकता. ये भोजापुर का विश्वास था।कुपित आत्मायें और दूसरे नक्षत्रों की छिनारें तो बस छोटी जाति की विधवाओं पर ही हमला करती हैं।
बड़की माई हर घर परिवार मे बस मंगल ही मंगल बॉटती रहीं. गोकि उनका छोड़ा गया भूना चना बच्चों के बीच कभीं न बॉटा गया।सब उसे गन्दी पोखरी मे फेंक आते थे।अचानक उन्हे अपने सामने पाकर उन्हे हर कोई सम्मान देता था. वरना लोग उनकी परछाई तक से डरते थे।
उनके बेटे मे उनके बुढापे का भार उठाने का दम ही न था।प्रधान साहब के गुजरने के बाद घर से उनका चना चबेना तक ले जाना बन्द हो गया था।बेटी भी अपनी मॉ की करतूतों के कलंक से अपना ससुराल सुरक्षित रखना चाहती थी।उसने भी भोजापुर आना बन्द कर दिया।डर दया माया कब तक बड़की माई का साथ देते! जब उनकी अपनी औलादें ही उनसे अपना मुॅह मोड़े बैठी थीं।
एक दिन बड़की माई अचानक भोजापुर से लापता हो गई।भोजापुर ने राहत की सॉस ली।सबका कहना थाःकल्याणकारी देवियॉ किसी एक गॉव मे ही नही ठहरतीं।उन्हे अपना कल्याण पूरे विश्व मे बॉटना होता है।
हमारे घर के सामने की पोखरी तो ऐसे भी बसाती रहती थी. पर जब तब उससे एक ऐसी सड़ान्ध उठती थी जो गॉव के लिए नई थी और बढती ही जा रही थी।दालानो मे सोना बैठना और पोखरी के बगल से गुजरना दुभर होता जा रहा था।ये सड़ान्ध लोगों के नाक मे ऐसा दम की कि दो चार लोगों को अपनी नाक पर अॅगोछी बॉधकर पोखरी मे उतरना ही पड़ा।गॉव भर के बच्चों के हग्गलों और औरतों के मासिकों के लिथडों से भरी इस पोखरी मे किसी कुक्कूर बिलार की लाश न मिली।बड़की माई जल समाधि ले ली थीं।
पूरा गॉव ये खबर सुनकर पोखरी के किनारे आ खड़ा हुआ।बड़की माई की सड़ी अधनंगी लाश पर सैकड़ों गमछियॉ एक साथ गिर पड़ीं।पूरा भोजापुर उनकी अन्तयेष्टि की तैयारी मे लग गया।बॉस कटने लग पड़े।गॉव का एक लड़का सायकल से मारकीन का कफ़न खरीदने सकलडीहा भागा।पलक झपकते बड़की माई की अर्थी बनारस चल पड़ी।
इन पच्चीस वर्षो मे भोजापुर मे भी काफी बदलाव आया।नहर वाला रास्ता अब पक्का हो चला है।धोबियाने मे ही नही. अहीराने मे भी कई पक्के मकान बन गए हैं।चमटोली अभी भी झुग्गे झोपड़ियों मे जी रहा है. पर वहॉ के कई बच्चे स्कूलों मे टॉप कर रहे हैं।एक धोबी तो बनारस मे एस पी बना बैठा है।सबसे बुरा हाल ठाकुरों का है।उन्हे उनकी पुश्तैनी जमीनों ने कहीं का न छोड़ा।उनके घर तक ढह रहे हैं।जमीन और गृहस्थी ही उनकी एकमात्र ताक़त थी जिसे बॉट बूॅट कर वो अपनी असहायता और अपनी जिद़ के बीच झूल रहे हैं।अब तहसीलदार और थानेदार तबके के लोग इन ठाकुरों की मड़ईयो मे गुड़ के साथ कुएॅ का पानी पीने नही आते।वो अहीराने के पक्के बईठकों मे दूध मलाई रबड़ियों से अपनी सेवा करवा जाते हैं।यहॉ तक कि भोजापुर के सरपंच पद का भार एक चौथी कक्षा पास चमाईन सम्हाल रही है।ठाकुरों के हॉथ मे अब भोजापुर की अगवाई न रही

.फिर इन्होने अपनी अगवाई मे भोजापुर को दिया भी क्या!इन्होने सिर्फ उसे दिशा और मतिभ्रम ही किया।इसके बावजूद कुँओं और पोखरों से आच्छादित भोजापुर आज भी बनारस जिले का एक जागरूक गॉव माना जाता है।

वो भावुक है और ऑसूओं की परिभाषा अच्छी तरह जानता है।

मास्टर साहब की हवेली आज तक खड़ी है...

प्रमोद कुमार सिंह